<u>सफलता की कहानी रामलाल की जुबानी</u>

बीकानेर जिले के हिम्मतासर गांव के रहने वाले प्रगतिशील व सफल बकरी पालक श्री रामलाल पुत्र आसुराम जाट अपने बचपन से बकरी, भेड़ चराने के कार्य के साथ ही कृषि का कार्य भी करते रहे हैं। पहले वह घर की आवश्यकतानुसार 10-15 बकरी रखते थे और अपनी 30 बीघा असंचिति (बारानी) कृषि भूमि पर कृषि कार्य करते थे। कृषि वर्षा पर ही निर्भर थी जिससे अधिक पैदावार नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर थी आज से 5 वर्ष पहले गांव हिम्मतासर गांव में वेटेरनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना के प्रशिक्षण कैम्प में रामलाल आये और परियोजना से प्रभावित होकर बकरी पालन को ही अपना व्यवसाय बनाने की ठान ली।

रामलाल बकरी परियोजना के रजिस्टर्ड मैम्बर बने। परियोजना की और से उन्हें मारवाड़ी नस्ल का बकरा दिया गया। आज उनके पास मारवाड़ी नस्ल की 70 बकरियां है जिनके लिए रामलाल को वेटेरनरी विश्वविद्यालय की बकरी परियोजना की तरफ से मारवाड़ी नस्ल का बकरा दिया गया है। रामलाल परियोजना की तरफ से प्रशिक्षण शिविर

में समय-समय पर बकरी पालन के बारे में जानकारी लेते रहते हैं और कृमिनाशक दवा व बकरियों का टीकाकरण भी समय-समय पर कराते रहते हैं। रामलाल के पास जो 30 बीघा असंचिति (बारानी) कृषि भूमि है उस पर वह खेती नहीं करके बकरी पालन का काम करते हैं। उसमें 35 खेजड़ी व पेड़ हैं, व 20 बैर के पेड़ हैं। इन पेड़ों को वर्ष में एक बार कटिंग (छांगते) करते है। खेजड़ी के व बेर के पत्ते बकरियों का पसंदीदा भोजन है। जो वर्ष भर का एक बार में इकट्ठा कर लेते है। इस चारे से बकरियां स्वस्थ रहती है। रामलाल ने बकरियों को रखने के लिए आधुनिक तरह के बाड़े व शेड़ बना रखे हैं, साफ पानी के लिए खालीयां बना रखी है। बकरी पालन व साफ सफाई में उनका पूरा परिवार साथ देता है। रामलाल ने बकरी के बालों को कातकर चारपाईयां भी बना रखी है। रामलाल ने बताया है कि उक्त बकरी परियोजना से जुड़ने से उसे काफी लाभ हुआ है। बकरियों की मृत्यु दर में काफी गिरावट आयी है। जिसकी वजह से आय भी बढ़ी है। वर्ष भर में 50 से 60 के बीच बकरियां व बकरे बेचकर रामलाल अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। रामलाल ने अजोला फार्मिग करने में रूचि दिखाई हैं। रामलाल समस्त गांव वालों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हुए है।

मारवाड़ी फिल्ड यूनिट राजुवास, बीकानेर